○ 13 / 12 / 22 की मुरली से चार्ट ○

⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *गयाना के नशे में रहे ?*

➢➢ *अपनी सेवा दूसरो से तो नहीं ली ?*

➢➢ *स्नेह की शक्ति द्वारा मेहनत से मुक्त रहे ?*

➢➢ *सदा निर्विघन रहे और दूसरो को निर्विघन बनाया ?*

———————————————————

⊹˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ °

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

⊹˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ °

〰✧ *सदा बेहद की आत्मिक दृष्टि, भाई-भाई के सम्बन्ध की वृत्ति से किसी भी आत्मा के प्रति शुभ भावना रखने का फल जरूर प्राप्त होता है इसलिए पुरूषार्थ से थको नहीं, दिलशिकस्त भी नहीं बनो।* निश्चयबुद्धि हो, मेरेपन के सम्बन्ध से न्यारे हो शान्ति और शक्ति का सहयोग आत्माओं को देते रहो।

⊹˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ °

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚
☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆
✪ *श्रेष्ठ स्वमान* ✪
⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं निर्बन्धन आत्मा हूँ"*

〰✧ सदा अपने को निर्बन्धन आत्मा महसूस करते हो? किसी भी प्रकार का बन्धन तो नहीं महसूस करते? *नालेजफुल की शक्ति से बन्धनों को खत्म नहीं कर सकते हो? नालेज में लाइट और माइट दोनो हैं ना।* नालेजफुल बन्धन में कैसे रह सकते हैं?

〰✧ *जैसे दिन और रात इक्ठ्ठा नहीं रह सकते, वैसे मास्टर नालेजफुल और बन्धन, यह दोनों इक्ठ्ठा कैसे हो सकते?* नालेजफुल अर्थात् निर्बन्धन। बीती सो बीती। जब नया जन्म हो गया तो पास्ट के संस्कार अभी क्यों इमर्ज करते हो?

〰✧ जब ब्रह्माकुमारकुमारी बन गये तो बन्धन कैसे हो सकता? ब्रहमा बाप निर्बन्धन है तो बच्चे बन्धन में कैसे रह सकते? *इसलिए सदा यह स्मृति में रखो कि हम मास्टर नालेजफुल हैं। तो जैसा बाप वैसे बच्चे।*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ (बापदादा ने ड्रिल कराई) मन के मालिक हो ना! तो सेकण्ड में स्टॉप, तो स्टॉप हो जाए। ऐसा नहीं आप कहो स्टॉप और मन चलता रहे, इससे सिद्ध है कि मालिक-पन की शक्ति कम है। *अगर मालिक शक्तिशाली है तो मालिक के डायरेक्शन बिना मन एक संकल्प भी नहीं कर सकता।*
स्टॉप, तो स्टॉप। चलो, तो चले।

〰✧ जहाँ चलाने चाहो वहाँ चले। ऐसे नहीं कि मन को बहुत समय की व्यर्थ तरफ चलने की आदत है, तो आप चलाओ शुद्ध संकल्प की तरफ और मन जाये व्यर्थ की तरफ तो यह मालिक को मालिक-पन में चलाना नहीं आता। यह अभ्यास करो। *चेक करो स्टॉप कहने से, स्टॉप होता है?*

〰✧ या कुछ चलकर फिर स्टॉप होता है? अगर गाडी में ब्रेक लगानी हो लेकिन कुछ समय चलकर फिर ब्रेक लगे, तो वह गाडी काम की है? ड्राइव करने वाला योग्य है कि एक्सीडेन्ट करने वाला है? *ब्रेक, तो फौरन सेकण्ड मे ब्रेक लगनी चाहिए।* यही अभ्यास कर्मातीत अवस्था के समीप लायेगा। संकल्प करने के कर्म में भी फुल पास।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *जैसे साइंस के यन्त्र दूरबीन द्वारा दूर की सीन को नज़दीक में देखते हैं ऐसे ही याद के नेत्र द्वारा, अपने फ़रिश्तेपन की स्टेज द्वारा दूर का दृश्य भी ऐसे ही अनुभव करेंगे जैसे साकार नेत्रों द्वारा कोई दृश्य देख आये। बिल्कुल स्पष्ट दिखाई देंगे अर्थात् अनुभव होगा।* साइंस का मूल आधार है लाइट। लाइट के आधार से साइंस का जलवा है। लाइट की ही शक्ति है। ऐसे ही सालेन्स की शक्ति का आधार है डिवाइन इनसाइट । इन द्वारा साइलेन्स की शक्ति के बहुत वन्डरफुल अनुभव कर सकते हो। यह भी अनुभव होंगे। जैसे स्थूल साधन द्वारा सैर कर सकते हैं वैसे ही जब चाहो, जहाँ चाहो वहाँ का अनुभव कर सकते हो। *न सिर्फ इतना जो सिर्फ आपको अनुभव हो लेकिन जहाँ आप पहुँचो उन्हों को भी अनुभव होगा कि आज जैसे प्रैक्टिकल मिलन हुआ। यह है सफलतामूर्त की सिद्धि।* वह तो रिवाजी आत्माओं को भी सिद्धि प्राप्त होती है। एक ही समय अनेक स्थानों पर अपना रूप प्रकट कर सकते और अनुभव करा सकते हैं। वह तो अल्प काल की सिद्धि है, लेकिन यह है ज्ञानयुक्त सिद्धि। ऐसे अनुभव भी बहुत होंगे। आगे चल कर कई नई बातें भी तो होंगी ना? *जैसे शुरू में घर बैठे ब्रह्मा रूप का साक्षात्कार होता था जैसे कि प्रैक्टिकल कोई बोल रहा है, इशारा कर रहा है, ऐसे ही अन्त में भी निमित्त बनी हुई शक्ति सेना का अनुभव होगा।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- शिवजयंती का त्यौहार बहुत धूमधाम से मनाना"*

➳ _ ➳ *अपने भाग्य के गीत गाती दिल से मुस्कुराती चमचमाती खुशियों से भरपूर मैं आत्मा मुधबन घर के आगन मे टहल रही हूँ... वाह कैसा अद्भुत अद्वितीय श्रेष्ठ शानदार भाग्य मैने पाया है...* प्यारे बाबा ने मुझे अपना बनाया है... मेरे भाग्य को जगाया है... काटें से फूल बनाया है... हर रंग से उसने मेरे बेरंग जीवन को भर दिया है... कौड़ी से हीरे तुल्य इस जीवन को बनाया है... वाह मेरे दिलाराम बाबा ने मुझे अपने दिल तख्त में बिठाया है... अपने नैनो का नूर बनाया है... कितना बाबा ने मुझ पर वेपनाह बेशुमार प्यार लुटाया है बरसाया है... कितना सुदंर ड्रामा में ये सीन आया है... ये मीठे दिल के जज्बात सुनाने मैं आत्मा फरिशता रूप धारण किए अपने प्यारे बाबा के पास वतन पहुचंती हूँ...

➳ _ ➳ *मीठे बाबा रूहानी जोश-जुनून से मुझ आत्मा को भरते हुए कहतें है :-* "मीठे राजदुलारे भागयवान बच्चे मेरे... *इस बार शिवरात्रि का ये त्योहार कुछ इस कदर धूम-धाम से मनाओं...* आ चुके है तुम्हारे कल्याणकारी पिता इस धरा पर, ऐसा चारों ओर आवाज फैलाओं... खूब ढोल-खूब नगाड़े खुशियों के बजाओं... सबको अज्ञान की निद्रा से जगाओं... सबको ज्ञान का प्रकाश देकर उनके जीवन से अज्ञान अन्धेरा मिटाओं... मीठे बच्चे ऐसे धूम-धाम से तुम शिवरात्रि का त्योहार मनाओं...."

❉ *मैं आत्मा रूहानी नशे और रूहानी जुनून से भरपूर होकर कहती हूँ :-* "मीठे रंगीले बाबा मेरे... आपकी इस रूहानी जोशिली समझानी से दिल बाग-बाग हो उठा है... *इस शिवरात्रि को जानदार, शानदार बनाने का मोर्चा सम्भालतें हुए

चारों ओर खुशियों के बाजें बजा रही हूँ...* कल्याणकारी पिता है धरा पर आ चुके, ये आवाज चारों ओर फैला रही हूँ... सबको अज्ञान निद्रा से जगा... शिवरात्रि का सच्चा महत्व सबको बता रही हूँ... अज्ञान अन्धेरा हटा ज्ञान प्रकाश फैला रही हूँ... ऐसे धूम-धाम से शिवरात्रि मना रही हूँ..."

➳ _ ➳ *मीठे प्यारे बाबा मुझ आत्मा को उमंग-उत्साह के रंग-बिरंगे पंख दे कहते है :-* "मीठे-मीठे प्यारे राजदुलारे बच्चे मेरे... शिवरात्रि के इस महान पर्व पर सबकी बिगड़ी को अब तुम बनाओं... ईश्वर पिता जो धरती पर अथाह खजानों को ले आया है... इस दौलत से हर दिल को रूबरू कराओं... सबको उनके सच्चे पिता से मिलाओं... *घर-घर में शिव पिता के आने का निमंत्रण पहुचाओं... मीठे बच्चे ऐसे शानदार जानदार तरीक़े से शिवरात्रि त्योहार मनाओं..."*

❉ *मैं आत्मा उमंग-उत्साह के रंगीले पंख लगाकर कहती हूँ :-* "मीठे दुलारें बाबा मेरे... आओ-आओ इस शुभ दिन पर ईश्वर से सुख-शांति की बेशुमार दौलत पाओं... ऐसा कह सबको बेशुमार दौलत से रूबरू करा रही हूँ... सोई तकदीर को सबकी जगा रही हूँ... *सत्य बाप का सत्य परिचय घर-घर में सुना रही हूँ... आप समान सबकी बिगड़ी बना रही हूँ... उनके खोए अस्तित्व से उनको रूबरू करा रही हूँ... इस शानदार तरीके से शिवजयंती मना रही हूँ..."*

➳ _ ➳ *मीठे लाडले बाबा मुझ आत्मा को विश्व कल्याणकारी भावनाओं से सजाते हुए कहतें है :-* "इस शिवरात्रि खुशियों की शहनाईयां बाजें बजाओं... सबको दिलखुश मिठाई खिलाओं... सबके जीवन को अब तुम आप समान खुशियों से सजाओं... *सबके सोए भाग्य को जगाओ... ऐसे तुम इस शिवरात्रि को चार चांद लगाओं... इस त्योहार को धूम-धाम से मनाओं..."*

❉ *मैं आत्मा विश्व कल्याणकारी भावनाओं से सज-धज कर कहती हूँ :-* "सच्चे सहारें बाबा मेरे... आपका जन्मदिन दिलों-जान से अथाह खुशियों के साथ मना रही हूँ... आपके आने की खबर सारे जहान को सुना रही हूँ... सबको आप समान खुशियों से सजा रही हूँ... *अल्फ बे का ज्ञान प्रकाश दे उनका भाग्य जगा दिलखश मिठाई खिला रही हूँ... इस कदर इस शिवरात्रि में चार-चांद लगा रही

हूँ...* बड़े धूमधाम से इस शिवरात्रि उत्सव को मना रही हूँ..."

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- विचार सागर मंथन करना है*"

➳ _ ➳ सागर के तले में छुपी अनमोल वस्तुयों जैसे सीप, मोती आदि को पाने के लिए एक गोताखोर को पहले उसकी गहराई में तो जाना ही पड़ता है। *जब तक गोताखोर पानी के ऊपरी हिस्से पर तैरता रहता है तब तक तेज लहरों, पानी की थपेड़ों और तूफानों का भी उसको सामना करना पड़ता है* परन्तु यदि वह इन सबकी परवाह किये बिना पानी की गहराई में उतरता चला जाता है तो नीचे गहराई में जा कर हर चीज शांन्त हो जाती है और वह सागर के तले में छुपी उन चीजों को प्राप्त कर लेता है।

➳ _ ➳ इस दृश्य को मन बुद्धि रूपी नेत्रों से देखते - देखते मैं विचार करती हूँ कि जैसे स्थूल सागर की गहराई में अनमोल सीप, मोती आदि छुपे होते हैं इसी तरह से स्वयं *ज्ञान सागर भगवान द्वारा दिये जा रहे इस ज्ञान में भी कितने अनमोल खजाने छुपे हैं बस आवश्यकता है इन खजानों को ढूंढने के लिए इस अनमोल ज्ञान की गहराई में जाने की अर्थात विचार सागर मंथन करने की*। मलाई से भी मक्खन तभी निकलता है जब उसे पूरी मेहनत के साथ मथा जाता है तो यहां भी अगर विचार सागर मन्थन नही करेंगे तो ज्ञान रूपी मक्खन का स्वाद भी नही ले सकेंगे। *इसलिये विचार सागर मन्थन कर, ज्ञान की गहराई में जा कर, फिर उसे धारणा में लाकर अनुभवी मूर्त बनना ही ज्ञान सागर द्वारा दिये जा रहे इस ज्ञान का वास्तविक यूज़ है*।

➳ _ ➳ हम बच्चो को यह ज्ञान दे कर, हमारे दुखदाई जीवन को सुखदाई, मनष्य से देवता बनाने के लिए स्वयं भगवान को इस पतित दनिया, पतित तन

में आना पड़ा। तो ऐसे भगवान टीचर द्वारा दिये जा रहे इस ज्ञान का हमे कितना रिगार्ड रखना चाहिए। *ज्ञान की एक - एक प्वाइंट पर विचार सागर मंथन कर उसे धारणा में ले कर आना और फिर औरों को धारण कराना ही भगवान के स्नेह का रिटर्न है*। और भगवान के स्नेह का रिटर्न देने के लिए ज्ञान का विचार सागर मन्थन कर, सेवा की नई - नई युक्तियाँ अब मुझे निकाल औरों को भी यह ज्ञान देकर उनका भाग्य बनाना है मन ही मन स्वयं से यह दृढ़ प्रतिज्ञा कर ज्ञान सागर अपने प्यारे परमपिता परमात्मा शिव बाबा की याद में मैं अपने मन बुद्धि को एकाग्र करती हूँ।

➳ _ ➳ मन बुद्धि की तार बाबा के साथ जुड़ते ही मैं अनुभव करती हूँ जैसे ज्ञान सूर्य शिवबाबा मेरे सिर के ठीक ऊपर आ कर ज्ञान की शक्तिशाली किरणों से मुझे भरपूर कर रहें हैं। *बाबा से आ रही सर्वशक्तियो रूपी किरणों की मीठी फुहारें जैसे ही मुझ पर पड़ती हैं मेरा साकारी शरीर धीरे - धीरे लाइट के सूक्ष्म आकारी शरीर मे परिवर्तित हो जाता हैं* और मास्टर ज्ञान सूर्य बन लाइट की सूक्ष्म आकारी देह धारण किये मैं फ़रिशता ज्ञान की रोशनी चारों और फैलाता हुआ सूक्ष्म लोक में पहुँच जाता हूँ और जा कर बापदादा के सम्मुख बैठ जाता हूँ।

➳ _ ➳ अपनी सर्वशक्तियों को मुझ में भरपूर करने के साथ - साथ अब बाबा मुझे विचार सागर मन्थन का महत्व बताते हए कहते हैं कि *"जितना विचार सागर मंथन करेंगे उतना बुद्धिवान बनेंगें और अच्छी रीति धारणा कर औरों को करा सकेंगे"*। बड़े प्यार से यह बात समझा कर बाबा मीठी दृष्टि दे कर परमात्म बल से मुझे भरपूर कर देते हैं। मैं फ़रिशता परमात्म शक्तियों से भरपूर हो कर औरों को आप समान बनाने की सेवा करने के लिए अब वापिस अपने साकारी तन में लौट आता हूँ।

➳ _ ➳ *अपने गॉडली स्टूडेंट स्वरूप को सदा स्मृति में रख अपने परमशिक्षक ज्ञान सागर शिव बाबा द्वारा दिये जा रहे ज्ञान को गहराई से समझने और उसे स्वयं में धारण कर फिर औरों को धारण कराने के लिए अब मैं एकांत में बैठ विचार सागर मंथन कर सेवा की नई - नई युक्तियाँ सदैव निकालती रहती हूँ*।

∬ 8 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं स्नेह की शक्ति द्वारा मेहनत से मुक्त होने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं परमात्म स्नेही आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∬ 9 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा सदा निर्विघ्न रहती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा सदैव दूसरों को निर्विघ्न बनाती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा सदैव यथार्थ सेवा करती हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ 1. डबल फारेनर्स के फेवरेट दो शब्द कौन से हैं? (कम्पैनियन और कम्पनी) यह दोनों पसन्द हैं। अगर पसन्द हैं तो एक हाथ उठाओ। भारत वालों

को पसन्द हैं? *कम्पैनियन भी जरूरी है और कम्पनी भी जरूरी है। कम्पनी बिना भी नहीं रह सकते और कम्पैनियन बिना भी नहीं रह सकते।* तो आप सबको क्या मिला है? कम्पैनियन मिला है? बोलो हाँ जी या ना जी? (हाँ जी) कम्पनी मिली है? (हाँ जी) ऐसी कम्पनी और ऐसा कम्पैनियन सारे कल्प में मिला था? कल्प पहले मिला था? ऐसा कम्पैनियन जो कभी भी किनारा नहीं करता, कितना भी नटखट हो जाओ लेकिन वह फिर भी सहारा ही बनता है। और जो आपके दिल की प्राप्तियां हैं, वह सर्व प्राप्तियां पूर्ण करता है।

➳ _ ➳ 2. तो बापदादा सभी बच्चों को यही रिवाइज करा रहे हैं कि सदा बाप के कम्पनी में रहो। बाप ने सर्व सम्बन्धों का अनुभव कराया है। कहते भी हो कि बाप ही सर्व सम्बन्धी है। *जब सर्व सम्बन्धी है तो जैसा समय वैसे सम्बन्ध को कार्य में क्यों नहीं लगाते! और यही सर्व सम्बन्ध का समय प्रति समय अनुभव करते रहो तो कम्पैनियन भी होगा, कम्पनी भी होगी। और कोई साथियों के तरफ मन और बुद्धि जा नहीं सकती। बापदादा आफर कर रहे हैं - जब सर्व सम्बन्ध आफर कर रहे हैं तो सर्व सम्बन्धों का सुख लो। सम्बन्धों को कार्य में लगाओ।* बापदादा जब देखते हैं - कोई- कोई बच्चे कोई-कोई समय अपने को अकेला वा थोड़ा सा नीरस अनुभव करते हैं तो बापदादा को रहम आता है कि ऐसी श्रेष्ठ कम्पनी होते, कम्पनी को कार्य में क्यों नहीं लगाते? फिर क्या कहते? *व्हाई-व्हाई बापदादा ने कहा व्हाई नहीं कहो, जब यह शब्द आता है, व्हाई निगेटिव है और पाजिटिव है 'फ्लाई', तो व्हाई-व्हाई कभी नहीं करना, फ्लाई याद रखो। बाप को साथ साथी बनाए फ्लाई करो तो बड़ा मजा आयेगा।* वह कम्पनी और कम्पैनियन दोनों रूप से सारा दिन कार्य में लाओ। ऐसा कम्पैनियन फिर मिलेगा? बापदादा इतने तक कहते हैं - अगर आप दिमाग से वा शरीर से दोनों प्रकार से थक भी जाओ तो कम्पैनियन आपकी दोनों प्रकार से मालिश करने के लिए भी तैयार है। मनोरंजन कराने लिए भी एवररेडी हैं। फिर हद के मनोरंजन की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी। ऐसा यूज करना आता है वा समझते हो बड़े से बड़ा बाबा है, टीचर है, सतगुरू है...? लेकिन सर्व सम्बन्ध हैं।

✺ *ड्रिल :- "बाप को कम्पेनियन और कम्पनी दोनों रूप से यूज करने का अनभव"*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा रूपी बच्ची मन-बुद्धि द्वारा एक सुंदर से घर में पहुँचती हूँ... वहाँ मैं अकेली हूँ ,उदास हूँ... वहाँ बहुत सन्नाटा हैं... अचानक से दरवाजा खुलते ही बाबा माँ के रूप में आते हैं और मैं तेज़ी से दौड़कर अपनी माँ के गले लग जाती हूँ...* ऐसा सुकून मैंने आज तक महसूस नहीं किया जैसा अब कर रही हूँ... फिर माँ मुझे बड़े प्यार से नहलाती हैं और सुन्दर-सुन्दर वस्त्र पहनाती हैं... प्यारे कोमल हाथों से मेरे बालों की मालिश करती हैं...

➳ _ ➳ माँ मुझे अपने हाथों से खाना बनाकर मुझे खिलाती हैं... फिर हम मनोरंजन करते है... हम दोनों छुपन-छुपाई का खेल खेलते हैं... *माँ मुझे बड़े ही प्यार से मखमल चादर ओढ़कर अपने पास सुला लेतीं है और मैं उनकी बाहों से लिपटकर सो जाती हूँ... मुझे सपनों में भी माँ ही दिखाई दे रहीं हैं...*

➳ _ ➳ *फिर वह मुझे बड़े प्यार से शांति और पवित्रता की किरणें न्यौछावर कर रहीं हैं... मैं सर्व खजानों का अनुभव कर रहीं हूँ... वह मेरी माँ ही नहीं बल्कि सतगुरु, बाप, भाई, बहन, सब कुछ हैं...* सतगुरु के रूप में वह मुझे सदगति देते हैं, बाप के रूप में वह मुझे सूक्ष्म और स्थूल चीज़े देते हैं, भाई के रूप में रक्षा करते हैं, बहन के रूप में सारी बातें मैं उनसे शेयर करती हूँ...

➳ _ ➳ मेरा अकेलापन अब दूर हो चुका हैं... *बाबा मेरे सच्चे कम्पैनियन हैं... वह मुझे रोज़ कम्पनी देते हैं... अब कोई साथियों की तरफ मन और बुद्धि नहीं जाती हैं... अब मेरे मुख से व्हाई नाम का शब्द तक नहीं निकलता... अब पूरा दिन बाबा की गोदी में फ्लाई करती रहती हूँ...* झूमती ही रहती हूँ... बाबा के प्यार में ही खोई रहती हूँ... उन्हीं की कम्पनी का सहारा लेकर सारी बाते उनसे शेयर करती हूँ...

➳ _ ➳ अब मैं हद के मनोरंजन का सहारा नहीं लेती हूँ... बाबा के साथ ही खेलती हूँ... अगर हद के मनोरंजन में जाना भी पड़ जाए तो बाबा को साथी बनाकर ले जाती हूँ... *जब कभी मैं दिमाग व शरीर से थक जाऊँ तब वह मेरी दोनों प्रकार से मालिश करते है... मैं कितना भी नटखट हो जाऊँ परन्त वह मेरा

सहारा बनकर हर कदम में मेरा साथ देते हैं...* अब दुःख आते हुए भी दुःख की महसूसता नहीं होती हैं...

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔